वृद्ध जनों की समस्याएं एवं चुनौतियॉ

[1]डॉ कृष्ण कुमार तिवारी,
[2]उत्तम कुमार विश्वास

शोध सारांश :-

अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वृद्धों की जनसंख्या मे निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इससे इस तथ्य से इंकार नही किया जा सकता कि आगे आने वाले दिनों मे जनसंख्या के अनुपात मे वृद्ध अधिक होते जाएँगे। स्वाभाविक तौर पर इनकी समस्याओं मे वृद्धि होगी। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि वृद्धों की समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास किए जाएँ। अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिवस वरिष्ठ नागरिकों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मनाया जाता है, जिन्हें कभी-कभी हमारे समाज द्वारा उपेक्षित किया जाता हैं। वर्तमान समाज में 100 में से 90 प्रतिशत बुजुर्ग माता पिता अपने बच्चों से अलग रहने के लिए मजबुर है, उनको खुद को ही खाना बनाकर खाना पड़ता है। और जो बुजुर्ग अपने बच्चों के साथ है उन्हें दो वक्त की खाना तो मिल जाते है लेकिन उनके हाल चाल पुछने वाला नहीं है उनसे प्यार से बातें सुनने के लिए बच्चों के पास समय नहीं है। जिन बच्चों के लिए सर्वस्य न्यौक्षावर किया उन बच्चों को अपने माता-पिता की परवाह ही नहीं है। उम्र के साथ बुजुर्गों के शरीर भी कमजोर हो जाते है और अनेक प्रकार के बिमारियां भी परेशान, करती है। वृद्धोजनों की तरह-तरह की समस्याएं होती है हमारा प्रयास समाजकार्य के माध्यम से उनकी समस्याएं कम करना।

शब्द संकेत :-वृद्धजन, समस्याएं, मजबूर, परेशान, बीमारी।

---

[1]सहायक प्राध्यापक,समाज कार्य, मैट्स विश्वविद्यालय,रायपुर छत्तीसगढ़
[2]शोध छात्र,समाज कार्य, मैट्स विश्वविद्यालय,रायपुर छत्तीसगढ़

प्रस्तावना :-

जीवन के अंतिम काल को वृद्धावस्था कहते हैं। इस अवस्था में अनेक प्रकार के चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कहते है बुढ़ापा ही बीमारी है। सभी को जीवन में बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था तथा

वृद्धावस्था से होकर गुजरना पड़ता है। यह जीवन का अन्तिम पड़ाव होता है। किसी भी समाजमें 60 वर्ष की आयु वाला व्यक्ति वृद्ध माना जाता है। ऐसा लगता है वर्तमान समय में वृद्धजनों की समस्याएं पहले की अपेक्षा अधिक है।

कई देशों मे 65 वर्ष की आयु के ऊपर के व्यक्ति को वृद्ध कहा जाता है। जहां तक भारत का सवाल है हम इस बात को ध्यान मे रख सकते है कि किस आयु को सरकार सेवानिवृत्ति की आयु निर्धारित करती है। अर्थात् किस आयु को पूरा करने पर वह कर्मचारी को शारीरिक व मानसिक **दृष्टि** से सेवा के लिये उपयोगी न मानते हुए उसे सेवानिवृत्त कर उसकी पिछली सेवाओ के उपलक्ष्य मे गुजारे के लिये उसे पेंशन अदा करती है। इस **दृष्टि** से हम देखते है कि पहले यह आयु 55 वर्ष थी। आगे चलकर इसमे वृद्धि की गई और यह 58 वर्ष हो गई। वर्तमान मे यह आयु 60 वर्ष है। इसलिए वर्तमान मे इसे वृद्धावस्था की पहचान का विश्वसनीय आधार माना जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ का भी मानना है कि 60 वर्ष की आयु से आगे की ओर बढ़ाव जनसंख्या के बुजुणगयत या वृद्धावस्था की ओर गमन की पहचान है। अतः वृद्ध से यहाँ हमारा आशय उस व्यक्ति से है जिसने 60 बर्ष की आयु पार कर ली है। इस **दृष्टि** से साठ वर्ष तक की आयु के व्यक्तियों की पहचान नई पीढ़ी और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की पहचान पुरानी पीढ़ी के रूप मे की जा सकती है।

एक समय था जब माता-पिता को भगवान मानकर, आदर्श मानकर सम्मान किया जाता था, परिवार में बुजुर्गों को एक स्तम्भ और अनुभवों का अपार भंडार माना जाता था। अफसोस की बात यह है कि आधुनिक बच्चों के लिए माता-पिता बोझ बन कर रह गए हैं। अजीब बात है न जिन बच्चों के लालन-पालन में उनका सारा जीवन व्यतीत हो गया, जिन्होंने अपने बच्चों की खुशियों के लिए हजारों कश्ट सहे, अब वही बच्चे उन्हें भुलकर अपने परिवार में ही व्यस्त हैं।सच कहूं तो ये बच्चे माता-पिता के कर्तव्य से विमुख हो चुके हैं।

बेचारे बुजुर्गों का **शेष** जीवन **कष्ट** और उपेक्षा की मार झेलकर बीत रहा है, स्थिति ऐसी हो गई है कि बुजुर्ग घर की दहलीज पर टक-टकी लगाए रहते हैं कि कोई आए तो दो-चार बातें कर लें। युवा पीढ़ी इतनी असंवेदनशील हो गई है कि उन्हें अब इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके माता-पिता कैसे हैं और किस हालत में हैं?

परिवार और समाज में असंवेदनशीलता की हद तो ये हो गई कि हम अपने ही जन्मदाता और पालनहार माता-पिता को दो वक्त की रोटी तक नहीं दे पाते हैं और उन्हें घर से निकाल देते है, वृद्धाश्रम जाने के लिए मजबूर कर देते हैं।

जो माता-पिता हमारे लिए सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं, हम उनके ही जान के दुश्मन आखिर कैसे हो जाते हैं?

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन :-

पूर्व में किए गए शोध अध्ययन भविश्य में किये जाने वाले कार्य के लिए मार्गदर्शक होते है। :ाोधार्थी को यह दि-ाा प्रदान करता है एवं नये क्षेत्र में :ाोध के लिए प्रेरित करते है। निम्नलिखित कुछ :ाोध साहित्य का अवलोकन किया गया हैं:-

- रचियता, संगीता एवं महे-ा (2019) वर्तमान समय में पारिवारिक समस्याओं के अंतर्गत वृद्ध जनों से संबन्धित समंस्या एक अहं समस्या है।
- यादव, जयसिंग (2017) वृद्धावस्था में कुछ प्रमुख समस्यायें है। जैसेः- 1.शारीरिक समस्याएं 2.मानसिक समस्याएं 3.स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं 4.आर्थिक समस्याएं 5. पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं 6. अकेलेपन की समस्याएं।
- कुमारी ,सुशमा **(2020)** किसी भी वृद्ध कोसमाज व परिवार में मान-सम्मान की अपेक्षा होती है लेकिन पा-चात्य संस्कृति के प्रवेश होने के कारण वृद्धो का अनादर देखने को मिलती है।
- अग्रवाल, गिरिराजशरण (2004) वृद्धावस्था की कहानियाँ, वृद्धावस्था में शरीर अशक्त हो जाने के कारण बीमारियाँ जल्दी पकड़ लेता है। परन्तु कार्यमुक्त होने के कारण अधिकतर बुजुर्गों के पास धन का अभाव होता है और बीमारियाँ बुढ़ापे की मुश्किलों का पर्याप्त कारण बन जाती हैं।
- प्रसाद, चन्द्र मौले-वर (2016) वृद्धावस्था विम'र्श, अनेक वृद्धों को आर्थिक रूप से अपने परिजनों जैसे पुत्र, पुत्री, भाई इ त्यादि पर निर्भर रहना पड़ता है, उसके व्यक्तिगत खर्चे परिजनों की आय से पूरे होते हैं। जिसमे अनेक बार असहज स्थितियों का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति का आत्म सम्मान भी दांव पर लग जाता है। कभी कभी आवश्यकताएं पूर्ण भी नहीं हो पाती, बीमारी इत्यादि में साधनों का अभाव कचोटता है। उसे अनेक प्रकार की मानसिक वेदनाओं का शिकार होना पड़ता है। कभी कभी उसे आत्मग्लानि होती है, उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। महिला वृद्ध जो पहले गृहणी रही है के लिए आर्थिक पर निर्भरता कोई व्यथा का कारण नहीं बनती क्योंकि वह पहले भी अपने पति पर निर्भर थी उसके पश्चात् अन्य परिजन पर निर्भर हो जाती है. अतः उसके लिए सिर्फ निर्भरता का स्रोत बदल जाता है। परन्तु पुरुष जिसका पहले पूरे परिवार पर बर्चस्व था, परिवार का पालनहार था और अब, उसे स्वयं किसी अन्य परिजन की आय पर आधारित होना पड़ता है. यह स्थिति उसके आत्म सम्मान के लिए कष्टकारी होती है कभी कभी आत्मग्लानी का अहसास होता है।
- **राय, सत्येन्द्र नाथ (2016)** वृद्धावस्था में सुखी जीवन समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक व्यवस्था ने बुजुर्गों के लिए अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता बढा दी है। संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवार बन चुके हैं। बढती जनसँख्या की समस्या, बढ़ता जीवन स्तर एवं बढती प्रतिस्पर्द्धा के कारण प्रत्येक समझदार दम्पति के लिए सीमित परिवार की अवधारणा को स्वीकार करना आवश्यक हो गया है। क्योंकि प्रत्येक माता पिता की इच्छा होती है। वह अपने बच्चे को जीवन की सारी खुशियाँ उपलब्ध करा पायें।

अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें जीवन की ऊंचाइयों तक पहुंचा पायें। यह सब सीमित परिवार के होते हुए ही संभव है। जैसे जैसे पुत्र-पुत्री बड़े होते हैं, शिक्षित होते हैं, युवावस्था में प्रवेश करते हैं। पुत्री को विवाह कर ससुराल विदा करना होता है और पुत्र को अपने अच्छे भविष्य की तलाश में अपने परिवार अपने शहर से दूर जाना पड़ता है। अंत में परिवार में रह जाते हैं सिर्फ बुजुर्ग पति और पत्नी, यदि बेटा विदेश चला जाता है तो उसे लौटने में भी साल साल भर लग जाता है।

शोध पद्धति :-

यह शोध मुख्य रुप से वर्णनात्मक एवं विश्लेशणात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन के उधेश्य

1. वृद्धजनों की समस्याओं का विश्लेशणात्मक अध्ययन करना।
2. वृद्धजनों में असमायोजन की समस्या के निदान में सामाजिक-आर्थिक आधार का अध्ययन करना।
3. बुजुर्गों के प्रति प्रेम, निष्ठा, आदर, समभाव आदि का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध-पत्र के उद्देश्यों की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ के बलोदाबजार से हथबंद,धोधा एवं उड़ेला ग्राम पंचायत के के सभी वर्गों/जातियों के 50 व्यक्तियों का चयन या—च्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वयं निर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है जिसमें समाज के सभी वर्गों/जातियों के लोगों से जुड़े कुल 20 प्रश्न रखे गये हैं।

सांख्यिकी अभिप्रयोग :-

प्रदत्तों का संकलन कर उनके विश्लेषण हेतु सांख्यिकी की प्रतिशत विधि का उपयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं।

आंकड़ों का सारणीकरण एवं विश्लेषण :-

प्रस्तुत अध्ययन एक शैक्षणिक अनुसंधान कार्य है। मैंने अनुसूची के रूप में अपने उत्तरदाताओं के पास जाकर उनसे प्रश्न पूछे तथा प्राप्त उत्तरों को नोट किया। इस विधि के अलावा मैंने प्रत्यक्ष साक्षात्कार के क्रम में

अवलोकित कुछ तथ्य भी एकत्रित किये। इन तथ्यों को संग्रहित करने के बाद मैंने मास्टर चार्ट बनाया ताकि तथ्यों के सारणीकरण एवं विश्लेषण में मदद मिल सके। प्रस्तुत विभिन्न सारणियों में बुजुर्ग उत्तरदाताओं से प्राप्त उनकी व्यक्तिगत सूचना एवं उनकी मनोवृत्ति को दर्शाया गया है। आयु के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति शोध अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न आयु समूह के उत्तरदाताओं की स्थिति 60 से 65 वर्ष, 66-70 वर्ष, 71 से 75 वर्ष, 76 से 80 वर्ष एवं 80 वर्ष से ऊपर है जिसका प्रतिशत क्रमशः 31.31, 25.25, 26.26, 11.11 एवं 06. 06 है।

बुजुर्गों की समस्याएं --

1. **शारीरिक दुर्बलताः-** आयु बढ़ने के साथ व्यक्ति का शरीर शिथिल होने लगता है। इन्द्रियाँ कमजोर होने लगती है। आँखो से दिखना कम हो जाता है। कान से कम सुनाई पड़ने लगता है। दाँत कमजोर हो जाते है। शरीर को शक्ति व गति प्रदान करने वाले प्रमुख संस्थान जैस पाचन संस्थान, रक्त, परिभ्रमण संस्थान, स्वशन संस्थान आदि कमजोर पड़ने लगते है। शरीर मे अनेक बीमारियां जैसे रक्तचाप मे व्यक्तिक्रम, ह्रदय रोग, डायबिटिज, जीर्ण रोग, स्पाण्डलायटिस, जोड़ो का दर्द, गठिया, प्रोस्टेट ग्लैण्ड का बढ़ना, अस्थना आदि आ जाती है। व्यक्ति की कार्यशक्ति घट जाती है।
2. **मानसिक रोगः-** अस्वस्थता, शरीरिक क्षीणता व मानसिक रोग बहुत कुछ साथ-साथ चलते है। शरीर के कमजोर पड़ने के बाद बुढ़ापे की अनुभूति ही व्यक्ति मे मानसिक निराशा का संचार करती है। वृद्ध व्यक्ति शारीरिक रूप से ही नही अपितु मानसिक रूप से भी अपने को बहुत असहाय महसूस करता है। बुढ़ापे की मानसिकता और निरूपायता के अहसास से उसके मन मे हताशा घर करने लगती है जिससे उसमे संवेगात्मक अस्थिरता उत्पन्न होती है। उसकी स्मरण शक्ति कमजोर पड़ने लगती है। शारीरिक कार्यक्षमता घटने और सामाजिक उपयोगिता कम होने के साथ वृद्ध व्यक्ति को अनेक मानसिक चिन्ताएँ घेर लेती है जिससे उसकी नल्द कम हो जाती है और वह मानसिक थकावट महसूस करने लगता है।
3. **अकेलेपन की समस्याः-** भारत में औद्योगीकरण तथा नगरीकरण में वृद्धि होने के कारण जैसे-जैसे संयुक्त परिवारों की जगह केन्द्रक परिवारों की संख्या में वृद्धि होना आरंभ हुई, परिवार के युवा सदस्य विवाह के बाद अपने माता-पिता के साथ रहना नहल्ल चाहते। फलस्वरूप जिस आयु में व्यक्ति को अपने बच्चों से सबसे अधिक सहायता और संरक्षण की आवश्यकता होती हैं, उस आयु में वे स्वयं को अकेला और निराश्रित महसूस करने लगते है। यदि वृद्ध पति और पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है तो व्यक्ति अपने दुःख-दर्द को किसी दूसरे से बाँटने की स्थिति में ही नही रह जाता। अकेलेपन की यह भावना वृद्धावस्था में मानसिक तनावों का एक प्रमुख कारण हैं। अनेक युवा जो अपने माता-पिता को विदेश ले जाकर उन्हें घरेलू नौकरों से भी बद्तर जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य कर देते हैं, उससे वृद्धजनों के पारिवारिक शोषण का स्वयं ही अनुमान लगाया जा सकता हैं।

4. **आर्थिक असुरक्षा की स्थितिः**–वृद्ध लोगों को प्रायः आर्थिक सुरक्षा संबंधी तनाव का भी सामना करना पड़ता है। पारिवारिक आय कम होने से परिवार के लोग बुजुर्गों को प्रायः भार स्वरूप देखने लगते है।
5. **संयुक्त परिवार के अभाव की समस्याः**– बुजुर्ग जनो को संयुक्त परिवार के अभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। संयुक्त परिवार मे वृद्धावस्था, बीमारी आदि के समय सुरक्षा प्रदान की जाती है, वही एकाकी परिवार मे व्यक्ति अपने परिश्रम से प्राप्त फल पर निर्भर रहकर वृद्धावस्था अथवा बीमारी के समय अपनी जीविका चलाता है।
6. **उचित देखभाल की समस्याः**–जिस परिवार मे कई सदस्य होते है, वहां तो बड़े बुजुर्गों की देखभाल ठीक तरह से हो जाती है, लेकिन एकाकी परिवार की स्थिति मे जब घर के सदस्य चले जाते है, तो अक्सर बुजुर्ग लोगों की देखभाल करने वाला कोई नही होता है, इससे उन्हें कभी-कभी बड़ी बाधा का सामना करना पड़ता है।
7. **मनोरंजन की समस्याः**–परम्परागत रूप से परिवार में विभिन्न उत्सवों और समारोहों के आयोजन से वृद्ध सदस्यों को अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलने का अवसर मिल जाता था। पड़ोसियों और मित्रों के बीच भी वृद्धों की दिनचर्या सरलता से पूरी हो जाती थी। आज उत्सवों और समारोहों की जगह परिवार में टेलीविजन ही मनोरंजन का एकमात्र साधन रह गया हैं। देखने और सुनने की शक्ति कमजोर हो जाने के कारण वृद्धजन टेलीविजन का भी अपनी इच्छानुसार उपयोग नहल्ल कर पाते। बच्चों के अध्ययन के नाम पर उनके माता-पिता के द्वारा भी वृद्धजनों के लिए टेलीविजन की सुविधा देना आवश्यक **नहीं** समझा जाता। इस प्रकार से वृद्धजनों के अकेलेपन में और भी वृद्धि हो जाती हैं।

बुजुर्गों की समस्या का कारणः–

1. **बुढ़ापा के कारण** :–उम्र अधिक होने के कारण **श**रीर कमजोर हो जाते है और अनेक प्रकार के बीमारियां हो जाती हैं जिसके कारण कई प्रकार की समस्या होती हैं।
2. **नई पीढ़ी का व्यक्तिगत स्वार्थ** :–आज कल अधिकतर लोग स्वार्थी हो गये है जहां वह अपना लाभ देखते है। वह कार्य करते हैं। वृद्धजन कार्य नहीं कर सकते है और उनके लिए खर्च करना पड़ता है इसलिए उसका ध्यान नहीं देते है। अगर कई वृद्ध पें**शन** प्राप्त करता है तो उसका थोड़ा देखरेख करते हैं।
3. **पाश्च्यात्य देश का अंधानुकरण** :– दुसरे देश के चकाचौंध को देखकर प्रभावित हो जाता है और उसका अंधानुकरण करता है । वह भुल जाता है कि वृद्ध माता-पिता की सेवा ही भगवान की सेवा है।

बुजुर्गों की समस्याओं के लिए जिम्मेदार कौन ? :–

पारिवारिक जिम्मेदारियां सबसे अधिक है क्योंकि जिसके लिए पुरा जीवन विसर्जित किया वही नजरांदज कर देते है यह समस्या सबसे दुखदायक समस्या है । इस समस्या के लिए जिम्मेदार कौन ?

- समाज
- शिक्षा व्यावस्था
- बच्चों
- मातापिता

समाज कितना जिम्मेदार– मैं अपनेआस-पास के गावं के बारे में बताउंगा । यहां अलग-अलग प्रकार के जातियों के लोग वास करते है। सबके अलग-अलग समाज है, सभी समाज में कुछ नियम है लेकिन किसी समाज में यह नियम नहीं कि

- अपनेमाता-पिता से दुरव्यावहार नहीं कर सकते है,
- उनकों जीवन पर्यन्त सेवा करना है चाहे वृद्ध माता पिता कुछ भी करें, ऐसा नहींकरने से दण्डित किया जाएगा।

बच्चे देखकर सीखते है, जब बच्चें बचपन से देखते है कि अपने माता-पिता अपने दादा-दादी के साथ कैसा व्यावहार करते है, कैसे बातें करते है, कैसे खाना देते है, कैसे कपड़ा देते है, यह सब बच्चों के कोमल मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जैसा देखता है वैसा सीखते है।

शिक्षा व्यवस्था कितने जिम्मेदार :-

- बच्चों में संस्कार की कमी, स्कूल, कॉलेज में शिक्षा तो दिया जाता लेकिन संस्कार सिखाया नहीं जाता है।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम से नैतिक शिक्षा देने वाले पाठ गायब हो गया है।
- माता-पिता व बड़े बुजुर्गों का सेवा करना ही धम है ऐसा पढ़ाया नहीं जाता है।

बच्चे कितने जिम्मेदार-

- अधिकतर बच्चे अपने आपको अपने माता-पिता से बुद्धिमान समझते है।
- आधुनिक समाज में नशा भी बहुत बड़ा कारण है।
- आजकल छोटे-छोटे बच्चे भी मोबाइल एव विडियो गेम के आदि होते जा रहे है जिसके चलते बिगड़ते जा रहे है।
- बच्चों में धर्य की कमी बार-बार टोकना पसंद नहीं करते हैं और माता-पिता गलत देखकर चुप नहीं रह सकते है।

वृद्ध माता-पिता कितने जिम्मेदार-

- वृद्ध माता-पिता बच्चे को छोटा समझते है लेकिन बच्चे अपने आपको बड़ा समझते है इसलिए बच्चे बार-बार टोकना रोकना पसंद नहीं करते है।
- कई माता पिता यह सोचते हैं कि बच्चे उनके हर बात माने ।
- बहू को पराया मानना उनको हरबात को गलत मतलब निकालना

1. **शारीरिक समस्याएं-** वृद्धावस्था में व्यक्तिओं की शरीर कमजोर हो जाता है , तरह-तरह की बिमारीयों से ग्रसित हो जाते है, बहुत से बुजुर्ग अकेले चलनेमें भी असमर्थ हो जाते है उन्हें लाठी या उठाकर हुहिल चेयर या किसी की सहारे की जरूरत होती है।
2. **मनसिक समस्याएं-** वृद्धावस्था में व्यक्तियों की मानसिक क्षमता कमजोर हो जाती है उन्हें भुलने की बीमारी हो जाती है ,
3. **समाजिक समस्याएं-** बुजुर्ग अनुभवों का खजाना हैं लेकिन आजकल की पीढ़ी उनकी अवहेलना करती है।
4. **आर्थिक समस्याए-** कुछ पेंशन धारक को छोड़कर शेष बुजुर्गो के पास पर्याप्त धन नहीं होता है। पैसा नहीं होता उसकी कोई कद्र नहीं होती है।
5. **अकेलापन की समस्या-** बुजुर्गों के पास समय बहुत होते है लेकिन उनके पास बैठने वाला कोई नहीं होता है। मजबूरी में उन्हें अकेले ही समय व्यतीत करना पड़ता है।

वृद्धोंजनों की समस्याओं का निवारण :-

1. वर्तमान और आने वाली पीढ़ी को स्वार्थीपन छोड़ना होगा।
2. वृद्धोजनों को उचित देखरेख करना होगा।
3. हर माता-पिता भगवान के रूप होते हैं इसी भाव से हर सम्भव सेवा करना हर बच्चों का कर्तव्य है इसे पालन करना होगा

निष्कर्श व सुझाव :-

भारत मे संयुक्त परिवार व्यवस्था वृद्धों को सामाजिक, **आर्थिक** एवं मानसिक सुरक्षा प्रदान करती रही है। अतः इसके विघटन को रोकने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये। परम्परागत भारतीय समाज मे सामुदायिक जीवन वृद्धों को उनकी किसी भी समस्या का एहसास नही होने देता था। अतः ऐसे सामुदायिक जीवन को पुनः मजबूत करने के उपाय किये जाने चाहिये। वृद्धों के लिये स्वस्थ मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए। वृद्धों की समस्या के समाधान हेतु यह भी बहुत ही जरूरी है की हम वृद्धवस्था को जीवन की अनिवार्यता के रूप मे स्वीकार करे, न कि बोझ के रूप मे।समय समय पर वृद्धों के लिये विशेष आयोजन जैसे-- सामान्य ज्ञान या खेल प्रतियोगितायें और कार्यशालाओं का आयोजन आदि किया जाना चाहिये।

सरकार की ओर से वृद्धों के लिये ”वृध्द होम” स्थापित करने चाहिए जिनमे समुचित सुविधायें हो। ऐसी संस्थाओं को सरकार की ओर से सहायता दी जानी चाहिये। वृद्धों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के लिये निःशुल्क व्यवस्था की जानी चाहिए। साथ ही वरिष्ठ नागरिकों के लिये बहुत कम प्रीमियम पर स्वास्थ्य बीमा व्यवस्था शुरू की जानी चाहिए। वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि बढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षित वृद्धों के अनुभवों का लाभ प्रौढ़ शिक्षा जैसी योजनाओं के लिया जाना चाहिए एवं अंशकालीन रोजगार दिये जाने की व्यवस्था भी की जानी चाहिए जिससे वृद्धजन व्यस्त रहें। वृद्धों के लिये पारिवारिक माहौल की व्यवस्था की जानी चाहिए। केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने वृद्ध सदनों एवं पालनाघरों को मिलाकर एक ही स्थान पर संचालित करने की योजना बनाई है जिससे वृद्धजनों को बच्चों की गतिविधियों का आनन्द मिल सके और वे जीवन रस का सम्पूर्ण आनंद ले सके।

हम सभी से निवेदन करते हैं–अपने माता-पिता की सेवा करें, उनसे प्यार से बातें करें, त्यौहार में नया कपड़ा दें और उनसे आशीर्वाद लें। आप अपने माता - पिता से जैसा व्यावहार करेंगे, ठीक वैसा ही व्यावहार आपके बच्चें आपसे करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- रचियता, संगीता एवं महेश (2019) वृद्धावस्था की समस्या एवं समाधान, Anthology: The Research
- यादव, जयसिंग (2019) भारत में वृद्धों की सामाजिक समस्यायें ,कारण एवं निदान International Journal of Science &Innovotive Research Studies.
- कुमारी, सुशमा (2020) भारतीय समाज में वृद्धों की समस्याओं के कारण एवं समाधान, International Journal of Applied Research.
- राष्ट्रीय वृद्ध नीति, राष्ट्रीय वृद्धजन शिक्षा संसाधन केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- अग्रवाल, गिरिराजशरण (2004) वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 115–116.।
- शिन्घाल, विनीता (2014) वृद्धावस्था : नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
- शर्मा, स्वर्णा कान्ता (2014) वृद्धावस्थाः बागबाँ से आगे, बुका होलिक पब्लिके-ान, नई दिल्ली।
- प्रसाद, चन्द्र मौले-वर (2016) वृद्धावस्था विमर्श, परिलेख प्रकाशन, नजीवाबाद, पृ0 15–16।
- राय, सत्येन्द्र नाथ (2016) व ृद्धावस्था में सुखी जीवन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 53–56।